पंचक :

आपने पंचकों के बारे में तो सुना होगा. पंचक क्या होते हैं और पंचकों में कौन-कौन से कार्य करने वर्जित होते हैं

पंचको को 3 श्रेणियों में बांटा गया है, **चंद्र पंचक, तिथि पंचक और सूर्य पंचक.**

यद्यपि सूर्य पंचक, तिथि पंचक का ही एक और प्रकार है परंतु हमने इसको सूर्य पंचक या बाण दोष के नाम से अलग श्रेणी में रखा है.

हम पहले चंद्र पंचक पर विचार करते हैं. --

चंद्र पंचक नक्षत्रों के आधार पर होते हैं. चंद्रमा जब कुंभ राशि में गोचर करता है और मीन राशि में गोचर करता है तो चंद्र पंचक होते हैं. उनमें धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से प्रारंभ होकर, शतभिषा नक्षत्र, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और रेवती नक्षत्र, ये 5 नक्षत्र पंचक कहलाते हैं. यह धारणा है कि पंचकों में कोई शुभ कार्य निषेध है, परंतु ऐसा नहीं है. पंचक सभी कार्यों के लिए वर्जित नहीं है. पंचकों में कुछ कार्य किए जाने की मनाही है.

चन्द्र पंचक			
क्रम	**नक्षत्र व चरण**	**वर्जित कार्य**	**फल**
1	धनिष्ठा 3 व 4 चरण	घास, लकड़ी और तेल इकट्ठा	आग भय,

2	शतभिषा सभी चरण	करना वर्जित, दक्षिण दिशा की यात्रा करना वर्जित, छत डालना वर्जित, चारपाई का निर्माण वर्जित, दाह संस्कार वर्जित	मृत्यु भय
3	पूर्वाभाद्रपद सभी चरण		
4	उत्तराभाद्रपद सभी चरण		
5	रेवती सभी चरण		

पंचकों में कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो शुभ माने गए हैं जैसे--

- धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र चर नक्षत्र होते हैं. अतः यात्रा, पर्यटन, मनोरंजन, कपड़े और गहने खरीदना इन नक्षत्रों में शुभ माना गया है.
- पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र की उग्र प्रकृति के अनुसार इस नक्षत्र की अवधि में कोर्ट आदि के कार्य, मुकदमा आदि के कार्य किए जाने चाहिए.
- उत्तराभाद्रपद नक्षत्र स्थिर प्रकृति का होता है. इसके दौरान शिलान्यास, योगाभ्यास और स्थाई कार्य किए जाने चाहिए.
- रेवती नक्षत्र शांत प्रकृति का होता है अतः इसमें अभिनय, कला संबंधी कार्य आदि किए जाने चाहिए. परामर्श, विवाह, मुंडन संस्कार, गृहप्रवेश, गृह निर्माण, उपनयन, व्यावसायिक कार्य आदि इस नक्षत्र के दौरान किए जा सकते हैं.

प्रिय दर्शकों पंचकों के दौरान मुख्य रूप से पांच प्रकार के कार्य निषेध है.

1. पंचकों के समय घास, लकड़ी और तेल इकट्ठा करना वर्जित है. इससे आग लग सकती है. लकड़ी की वस्तुओं को यदि खरीदना ही हो तो गायत्री जप और हवन करने के पश्चात खरीदना चाहिए.
2. दक्षिण दिशा की यात्रा करना वर्जित बताया गया है. यह यम की दिशा होती है. अतः उस दिशा में यात्रा करना अशुभ माना जाता है. यदि यात्रा करना

आवश्यक ही हो तो हनुमान जी का पूजन, जप आदि करने के पश्चात यात्रा करें.

3. पंचकों के दौरान मकान आदि की छत डालना वर्जित बताया गया है. किसी घर की छावन बिछावन वर्जित है. यदि अति आवश्यक हो तो श्रमिकों को मिठाई खिलाकर शनि का जप व् दान करने के पश्चात यह कार्य करें.
4. पंचकों के दौरान चारपाई का निर्माण वर्जित है. आप को यदि ऐसा करना है तो पंचक की अवधि बीत जाने के बाद ही करें.
5. पंचकों के दौरान दाह संस्कार वर्जित है, क्योंकि यह माना जाता है कि यदि पंचक के समय किसी शव का अंतिम संस्कार किया जाता है तो 5 व्यक्तियों की मृत्यु का सामना करना पड़ सकता है. यदि ऐसा आवश्यक हो जाता है तो 5 डमी शव बनाकर या कुशा के शव बनाकर साथ में दाह संस्कार करें.

अब हम विचार करते हैं दूसरी श्रेणी के पंचको के बारे में, जिनको कहते हैं-

तिथि पंचक या बाण पंचक--

प्रिय दर्शकों! इनकी जांच करने के लिए तिथि की संख्या, नक्षत्र की संख्या, वार की संख्या और लग्न की संख्या का योग करें और 9 का भाग दें, जो शेष बचेगा उसके अनुसार पंचक होगा.

इसमें जो तिथि होती है विक्रम संवत के अनुसार वह ले, नक्षत्र की संख्या अश्वनी से गिन कर ले, वार की संख्या रविवार से गिन कर ले, लग्न की संख्या मेष राशि से गिन कर ले. जिस समय का विचार व जिस दिन का विचार करना हो उस समय उस दिन यह सब ज्ञात करें और इनका योग करें और 9 से भाग देने पर जो शेष बचता है इसके अनुसार पंचक होते हैं.

तिथि पंचक या बाण पंचक

क्रम	गणना	शेष	पंचक / बाण	फल
1	तिथि की संख्या, नक्षत्र की संख्या, वार की संख्या और लग्न की संख्या के योग में 9 का भाग	1	मृत्यु पंचक	शारीरिक हानि
2		2	अग्नि पंचक	आग से हानि
3		4	राज पंचक	राज्य से हानि
4		6	चोर पंचक	चोरों से हानि
5		8	रोग पंचक	स्वास्थ्य हानि

- यदि 1 शेष बचता है तो मृत्यु पंचक होता है जो शारीरिक हानि का संकेत करता है.
- यदि 2 शेष बचता है तो अग्नि पंचक या अग्निबाण होता है जो आग से होने वाले नुकसान को इंगित करता है.
- यदि 4 शेष बचता है तो राज पंचक होता है जो राज्य की ओर से होने वाले नुकसान को बताता है.
- यदि 6 शेष बचता है तो चोर पंचक या चोर बाण होता है जो चोरी आदि की घटनाओं को बताता है.
- यदि 8 शेष बचता है तो रोग बाण या रोग पंचक होता है जो स्वास्थ्य के बारे में, रोग के बारे में बताता है.

यदि शेष 3, 5, 7 या 0 बचे तो अच्छा होता है. शुभ फल प्राप्त होता है.

- यह ध्यान रखें कि मृत्यु बाण के समय विवाह आदि कार्य नहीं करने चाहिए क्योंकि इससे मृत्यु का खतरा रहता है.
- अग्निबाण के समय कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिसमें अग्नि से हानि होने की आशंका रहती है.

- राज बाण के समय कोई राजकीय कार्य नहीं करना चाहिए अन्यथा राज्य संबंधी हानि देखने को मिल सकती है.
- चोर बाण के समय यात्रा वर्जित बताई गई है. इससे सामान चोरी होने का भय होता है.
- रोग बाण के समय कोई इस प्रकार का कार्य नहीं करना चाहिए जिसमें स्वास्थ्य लाभ लेना हो. अर्थात डॉक्टर से सलाह या दवा लेनी हो या कहीं भी कोई रोग की आशंका हो, ऑपरेशन आदि करवाना हो तो उससे बचना चाहिए.

प्रिय दर्शकों हम चर्चा करते हैं सूर्य पंचक के बारे में--

यद्यपि यह बाण दोष का ही एक और प्रकार है परंतु हमने इस बाण दोष को अलग श्रेणी में सूर्य पंचक के नाम से रखा है.

इसमें भी उसी प्रकार से फल प्राप्त होते हैं परंतु इसको ज्ञात करने का अलग तरीका है.

प्रिय दर्शकों हम इसकी चर्चा करते हैं.–

- **अब मृत्यु बाण पर विचार करते हैं-** सूर्य की डिग्री में 4 जोड़ दें और 9 का भाग दें. यदि शेष 5 है तो मृत्यु बाण होता है. यह तब घटित होता है जब सूर्य किसी भी राशि में 1°, 10°, 19° या 28° पर होता है।
- **अग्नि बाण का विचार करते हैं-** सूर्य की डिग्री में 3 जोड़ें और 9 से विभाजित करें. शेष 5 बचता है तो अग्निबाण होता है. यह तब घटित होता है जब सूर्य किसी भी राशि में 2°, 11°, 20° या 29° पर होता है।

- **अब राज बाण पर विचार करते हैं-** सूर्य की डिग्री में 1 जोड़ें और 9 से विभाजित करें. यदि शेष 5 बचता है तो राज बाण होता है. यह तब घटित होता है जब सूर्य किसी भी राशि में 4°, 13°, या 22° पर होता है।
- **चोर बाण पर विचार करते हैं-** सूर्य की डिग्री में 8 जोड़ दें और 9 से विभाजित करें. यदि शेष 5 बचता है तो चोर बाण होता है. यह तब घटित होता है जब सूर्य किसी भी राशि में 6°, 15°, या 24° पर होता है।
- **रोग बाण के बारे में.-** जब हम किसी मुहूर्त का विचार कर रहे हैं उस समय की सूर्य की डिग्री में 6 जोड़ दें और 9 से भाग दें. यदि शेष 5 बचता है, तो रोग बाण होता है. यदि सूर्य 0 से 1 डिग्री का है तो यह पहली डिग्री है, 1 से 2 डिग्री का है तो यह दूसरी डिग्री है, आदि)। यह तब घटित होता है जब सूर्य किसी भी राशि में 8°, 17° या 26° पर होता है।

शशल्य बाण पर विचार करते हैं -यदि पिछली 5 गणनाओं में आए शेषों को जोड़ें और 9 से विभाजित करें तो यदि शेष 5 बचता है तो शशल्य बाण होता है. पाँचों गणनाओं में जो भी शेष बचे, अर्थात, कोई बाण न भी हो तो जो शेष बचे उसे लेना है.

सूर्य पंचक				
क्रम	**गणना**	**शेष**	**पंचक / बाण**	**फल**
1	4 जोड़ें व 9 का भाग दें	5	मृत्यु पंचक	शारीरिक हानि
2	3 जोड़ें व 9 का भाग दें	5	अग्नि पंचक	आग से हानि
3	1 जोड़ें व 9 का भाग दें	5	राज पंचक	राज्य से हानि
4	8 जोड़ें व 9 का भाग दें	5	चोर पंचक	चोरों से हानि
5	6 जोड़ें व 9 का भाग दें	5	रोग पंचक	स्वास्थ्य हानि

प्रिय दर्शकों!

- व्यापार आदि के मुहूर्त के लिए **राज्य या नृप बाण** से बचना चाहिए.
- गृह निर्माण के लिए **राज्य और अग्निबाण** से बचना चाहिए.
- यात्रा के लिए **चोर बाण** से बचना चाहिए.
-
- चाहिए.
- शशल्य बाण सभी घटनाओं में **सभी कार्यों के** लिए वर्जित है. अतः बचना चाहिए.

चोर और रोग बाण रात्रि के समय प्रतिकूल होते हैं और यदि कोई अच्छा मुहूर्त नहीं मिलता है तो दिन के समय में भी प्रतिकूल हो सकते हैं. रात्रि में अधिक प्रतिकूल होते हैं परंतु दिन में भी यदि कोई अच्छा मुहूर्त नहीं है तो खतरा हो सकता है.

अग्नि और राज बाण दिन के समय प्रतिकूल होते हैं और रात्रि में बहुत अच्छा मुहूर्त नहीं है तो रात्री में भी खतरा हो सकता है.

मृत्यु बाण गोधूलि वेला में, अर्थात सूर्योदय और सूर्यास्त के 2 घंटे पहले प्रतिकूल होता है. यदि कोई अच्छा मुहूर्त नहीं हो तो खतरा हो सकता है.

शनिवार को राज पंचक या बाण हो तो विशेष रूप से बचना चाहिए. यह विशेष रूप से सरकारी नौकरियों में काम करने वाले लोगों को प्रभावित करता है।

बुधवार को **मृत्यु बाण** से विशेष रूप से बचना चाहिए.

मंगलवार को **अग्निबाण और चोर बाण** से विशेष रूप से बचना चाहिए.

रविवार को **रोग बाण** से विशेष रूप से बचना चाहिए.

मुहूर्त के समय यदि सूर्य, चंद्रमा और अन्य ग्रह अनुकूल हो तो पंचक या बाण दोष का विशेष असर नहीं होता है.

कोई भी शुभ कार्य करने से पहले इन पंचकों या बाणों का विचार अवश्य कर लेना चाहिए.